महायज्ञ का पुरस्कार

उद्देश्य :-

यशपाल द्वारा रचित "महायज्ञ का पुरस्कार" एक पौराणिक कहानी है, जिसका उद्देश्य यह बताना है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है। लेखक का उद्देश्य इस कहानी द्वारा दान और परोपकार के सच्चे स्वरूप से परिचित कराना है। स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के कष्टों का निवारण करना ही मानव धर्म है। केवल दिखाने के लिए किया गया यज्ञ, दान या कोई भी कार्य महत्व हीन होता है। निःस्वार्थ भाव से अभिमान और अहंकार त्याग कर किया गया दान और यज्ञ ही वास्तव में सच्चा महायज्ञ है। इस प्रकार लेखक ने इस कहानी में त्याग के सुख और उसके फल की महिमा बताई है। जैसे कि सेठ को उसके निःस्वार्थ भाव से किए गए कार्य का फल मिला।

शीर्षक की सार्थकता :-

कहानी का शीर्षक उचित एवं सार्थक है। कहानी का ~~संमग्र~~ सम्पूर्ण कथानक यज्ञ से प्रारंभ होकर यज्ञ के इर्द-गिर्द घुमता है। सेठ के मानवता के नाते एक भूखे कुत्ते को अपनी सारी रोटियाँ खिलाना, जिसे उन्होंने यज्ञ समझकर नहीं बल्कि अपना कर्तव्य समझकर किया था। इसी महायज्ञ के परिणामस्वरूप उन्हें हीरे-जवाहरातों से भरा एक तहखाना मिला जो उनके महायज्ञ का पुरस्कार था। अतः हम यह कह सकते है कि शीर्षक "महायज्ञ का पुरस्कार निःसंदेह उचित है।

प्रश्न / उत्तर

Q1. मद्दा यज्ञ का पुरस्कार किस प्रकार की कद्दानी है? इस कद्दानी से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर यद्द एक प्रेरणाप्रद पौराणिक कद्दानी है। इस कद्दानी से हमें यद्द शिक्षा मिलती है कि हमें प्रत्येक प्राणी से प्रेम और दया करना चाहिए। हम स्वार्थ से दूर रद्दकर अपना काम करे, तथा विपत्ती में भी अपना धर्म न भूले यद्दी सच्चा मद्दायज्ञ है। जैसे कि सेठ ने किया। स्वयं भूखे रद्दकर उन्होंने कुत्ते को भोजन खिलाकर उसकी जान बचाई और गरीबी में भी सत्कर्म का मुल्य ग्रद्दण नद्दीं किया जो एक सच्चा मानव धर्म है।

Q2. "सेठ जी, यज्ञ खरीदने के लिए तो हम तैयार है, पर आपको अपना मद्दायज्ञ बेचना पड़ेगा।"

क

क) वक्ता कौन है? उसका उपर्युक्त कथन सुनकर सेठ जी को क्यों लगा कि उनका मज़ाक उड़ाया जा रद्दा है?

उत्तर वक्ता धन्ना सेठ की पत्नी है। जब धन्ना सेठ की पत्नी ने यज्ञ बेचने के लिए आए सेठ से कद्दा कि वे यज्ञ खरीदने के लिए तैयार है परंतु उन्हें अपना मद्दायज्ञ बेचना द्दोगा। तब उन्हें लगा कि सच शायद सेठानी उनकी द्दँसी उड़ा रद्दी है क्योंकि मद्दायज्ञ तो दूर, सेठ ने बरसों से कोई सामान्य यज्ञ भी नद्दीं किया था।

ख) सेठानी के अनुसार सेठजी ने कौन सा मद्दायज्ञ किया था?

उत्तर सेठानी के अनुसार रास्ते में स्वयं न खाकर चारों सेठी रोटियाँ भूखे कुत्ते को खिला देना मद्दायज्ञ से कम नद्दीं। यज्ञ कमाने की इच्छा से धन-दौलत लुटाकर किया गया यज्ञ सच्चा यज्ञ नद्दीं है, निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म द्दी सच्चा मद्दायज्ञ है।

ग) सेठानी की बात सुनकर यज्ञ बेचने आए सेठ की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर सेठानी की बात सुनकर यज्ञ बेचने आए सेठ सोचने लगे कि भूखे को खाना देना सभी का कर्तव्य है। उसमें यज्ञ जैसी क्या बात है। सेठ जी कोई भी उत्तर दिए बिना ~~व~~ चुपचाप अपनी पोटली उठाई और दुबेली से बहार चले गए। उन्हें मानवोचित कर्तव्य का मुल्य लेना उचित न लगा।

Q3. "सेठ ने आद्योपांत सारी कथा सुनाई। कथा सुनकर सेठानी की समस्त वेदना ~~व~~ जाने कहाँ विलीन हो गई।

क) सेठ जी को खाली हाथ वापस आते देखकर सेठानी की क्या प्रतिक्रिया ~~थी~~ हुई और क्यों?

उत्तर सेठ जी को खाली हाथ वापस आया देख सेठानी आशंका से काँप उठी। पूछे जाने पर सेठ ने सेठानी को शुरू से अंत तक सारी कथा सुनाई। उनकी बात सुनकर सेठानी की सारी वेदना विलीन हो गई, हृदय ~~उल्लास~~ उल्लासित हो उठा। उन्हें अपने पति पर गर्व हुआ। ऐसा इसलिए क्योंकि उनके पति ने विपत्ती में भी धर्म नहीं छोड़ा।

ख) सेठ जी की बात सुनकर सेठानी की समस्त वेदना क्यों विलीन हो गई?

उत्तर जब सेठ ने ~~पत्नी~~ अपनी पत्नी को सारी कहानी सुनाई, उनकी सारी वेदना विलीन हो गई। उनका हृदय यह देख कर उल्लासित हो गया था कि उनके पति ने विपत्ती में भी अपना धर्म नहीं छोड़। उनका मानना था कि सच्ची कर्तव्य भावना और निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म अवश्य फल देता है। उनको अपने पति पर गर्व हुआ तथा इश्वर पर भरोसा रखने को कहा।

Q4. "पर सब दिन होत न एक समान' अकस्मात् दिन फिरे और सेठ ~~को~~ को गरीबी का मुँह देखना पड़ा। संगी-साथियों ने भी मुँह फेर लिया और नौबत यहाँ तक आ गई कि सेठ व सेठानी भूखे मरने लगे।"

क) 'सब दिन होत न एक समान' का कहानी से क्या संबंध है? बुरा समय किसका आया था तथा इससे पहले उनकी स्थिति कैसी थी?

उत्तर 'सब दिन होत न एक समान' इस उक्ति का अर्थ है कि जीवन में हमेशा एक समान परिस्थिति नहीं रहती, जो कि कहानी में सेठ की स्थिती की ओर इंगित करता है। बुरा समय सेठ का आया था। पहले वे बहुत धनी थे। वे अपना धन गरीबों में बाँटा करते थें।